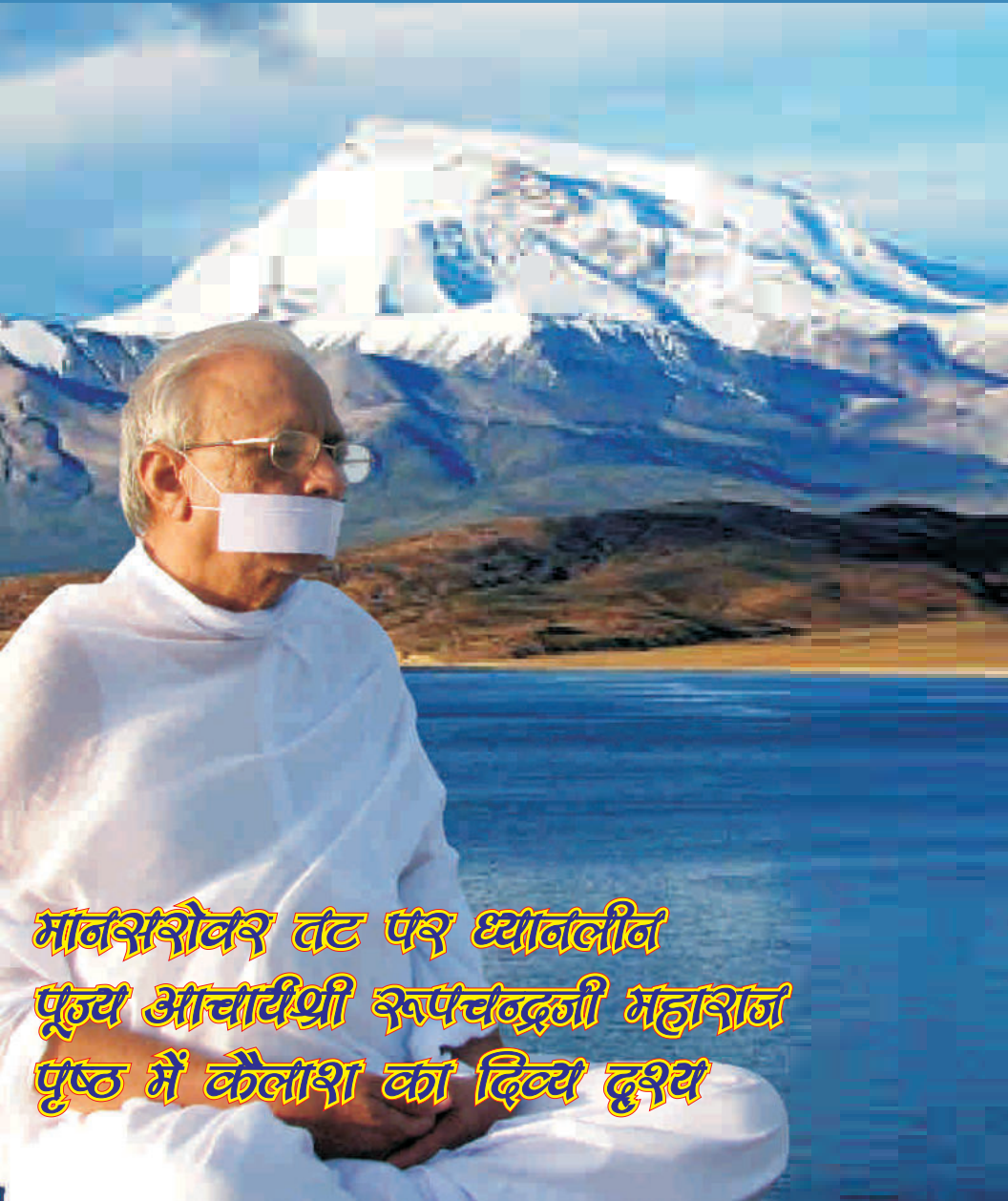


जून 2017 मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार - सद्विचार - सत्संस्कार



मानसशेखर तट पर ध्यानलीन
पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाशय
पृष्ठ में कैलाश का दिव्य दृश्य

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

मार्गदर्शन :

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :

साध्वी कनकलता
साध्वी वसुमती

परामर्शक :

श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :

अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :

श्रीमती निर्मला पुगलिया

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये
आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक

अरुण तिवारी

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)

पोस्ट बॉक्स नं. : 3240

सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने,
नई दिल्ली - 110013

फोन नं. : 26345550, 26821348

Website : www.rooprekha.com

E-mail : contact@manavmandir.info



इस अंक में

सहजता विषाद को दूर रखती है और सरलता जीवन को आसान बनाती है

सहजता और सरलता प्राकृतिक स्वभाव है, वह किसी आवरण या मेकअप पर निर्भर नहीं है। आवरण हमेशा दोहरे चरित्र को परिलक्षित करता है। जो है, वह नहीं है और जो नहीं है, वह है। सहज और सरल आदमी के व्यवहार और कर्म में फर्क नहीं होता है। वह जैसा है, वैसा ही दिखता है। इसके सबसे ठोस उदाहरणों में बुद्ध, महावीर, क्राइस्ट, कबीर, दर्यानंद, विवेकानंद, राजा राममोहन राय, गांधी सहित अनगिनत लोगों के नाम लिए जा सकते हैं। इनमें किसी ने भी दोहरा जीवन नहीं जिया।

05

कृतज्ञ भाव

व्यक्ति जब से समाज में जन्म लेता है उस पर समाज के उपकारों का ऋण चढ़ता जाता है। बाल्यावस्था में वह माता-पिता व घर के सदस्यों से उपकृत होता है। खाना-पीना, चलना, बोलना इत्यादि जीवन-विकास के प्रारम्भिक सूत्र वह अपने निकटवर्ती व्यक्तियों से सीखता है। बालक के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास का पहला श्रेय घर के सदस्यों को ही है।

07

कामवासना हावी क्यों हो जाती है?

अगर लोग जीवन को वैसे ही देखें, जैसा कि यह वास्तव में है, तो अधिकतर लोग बहुत थोड़े समय में ही कामवासना से बाहर आ जाएंगे। बहुत से लोग इसमें पड़े बिना ही इससे बाहर आ जाएंगे। बात सिर्फ इतनी है कि जीवन का फोकस ठीक न होने की वजह से हर चीज बिगड़ गई है, और बढ़ा-चढ़ा दी गई है। वरना आप देखते, कि ज्यादातर लोगों की इसमें कोई खास रुचि ही नहीं होती, या फिर इसमें उनकी रुचि सिर्फ उतनी होती जितना जरूरी है

23

**शरीर का हिस्सा शरीर को दें,
आत्मा का हिस्सा आत्मा को**

मंत्र-जप, योग-प्राणायाम, स्वाध्याय-ध्यान ये सब आत्मा की खुराक है। ये अभ्यास आपकी दिन-चर्या के अनिवार्य अंग बनने चाहिए। यदि पूरा परिवार साथ मिलकर ये अभ्यास करें तो इनका प्रभाव सौगुना बढ़ जाएगा। सबेरे ये अभ्यास पूरा परिवार साथ करे तथा सायं पूरे परिवार का भोजन साथ-साथ हो, तो आप अपने पारिवारिक जीवन में एक अलग ही आध्यात्मिक ऊर्जा तथा प्रेमल वातावरण का अनुभव करेंगे।

28

जब मैं था तब हरि नहीं, जब हरि मैं हूं नांय।
प्रेम गली अति सांकरी, ता में दो न समाय।।

बोध-कथा

बलि और बुद्ध

किसी राज्य में यज्ञ हेतु राजा एक बकरे की बलि चढ़ाने जा रहा था। उसी समय उधर से भगवान बुद्ध गुजर रहे थे। राजा को ऐसा करते देख वह राजा से बोले- 'ठहरो, राजन्! यह क्या कर रहे हो? इस बेजान बकरे की भेंट क्यों चढ़ा रहे हो? आखिर किसलिए?' राजा ने कहा- 'इसकी बलि चढ़ाने से मुझे बहुत पुण्य प्राप्त होगा। और यह हमारी प्रथा भी है।' राजा की इस बात पर बुद्ध ने कहा- 'यदि ऐसी बात है तो मुझे भेंट चढ़ा दो। तुम्हें और ज्यादा पुण्य मिलेगा। बकरे के मुकाबले एक मनुष्य की बलि से तुम्हारे भगवान और खुश होंगे।' यह सुनकर राजा थोड़ा डरा। क्योंकि बकरे की बलि चढ़ाने में कोई हर्जा नहीं था। बकरे की तरफ से बोलने वाला कोई होगा, ऐसा राजा सोच नहीं सकता था। मगर, बुद्ध की बलि चढ़ाने की बात मन में आते ही राजा कांप गया। उसने कहा- 'अरे, नहीं महाराज! आप ऐसी बात न करें। इस बारे में तो मैं सोच भी नहीं सकता। बकरे की

बात अलग है। ऐसा तो सदियों से होता आया है। और फिर इसमें किसी का नुकसान भी तो नहीं। बकरे का भी फायदा ही है। वह सीधा स्वर्ग चला जाएगा।' बुद्ध बोले- 'यह तो बहुत ही अच्छा है, मैं स्वर्ग की तलाश कर रहा हूं, तुम मुझे बलि चढ़ा दो और मुझे स्वर्ग भेज दो। या फिर ऐसा क्यों नहीं करते कि तुम अपने माता-पिता को ही स्वर्ग भेज दो। और खुद को ही क्यों रोके हुए हो? जब स्वर्ग जाने की ऐसी सरल व सुगम तरकीब मिल गई है तो काट लो गर्दन। इस बेचारे बेजान बकरे को क्यों स्वर्ग में भेज रहे हो? यह शायद स्वर्ग में जाना भी न चाहता हो। बकरे को खुद ही चुनने दो कि उसे कहां जाना है।' राजा के सामने अपने तर्कों की पोल खुल चुकी थी। वह महात्मा बुद्ध के चरणों पर झुक कर बोला- 'महाराज आपने मेरी आंखों पर पड़े अज्ञान के परदे को हटाकर मेरा जो उपकार किया है वह मैं भूल नहीं सकता।'।

सबसे महत्वपूर्ण है भरोसा

मनसूविद् कहते हैं कि आप वही हो जाते हैं, जिसका स्वप्न आपमें पैदा हो जाता है। अभी तो मनसूविद् कहते हैं कि स्कूल में किसी बच्चे को गधा, मूर्ख नहीं कहना चाहिए। क्योंकि अगर यह धारणा मजबूत हो जाए, तो वह वही हो जाएगा, जो उसके शिक्षक कह रहे हैं। और दुनिया में इतने जो गधे दिखाई पड़ते हैं, इसमें नब्बे परसेन्ट शिक्षकों का हाथ है। ये बेचारे गधे थे नहीं, इनको गधे कहने वाले लोग मिल गए। और उन्होंने धारणा इतनी मजबूत बिठा दी कि अब ये भी मानते हैं, अब ये भी स्वीकार करते हैं।

मनसूविद् कहते हैं, किसी को ऐसा कहना गलत है। किसी को बीमार कहना गलत है। अभी तो मनसूविद् कहते हैं कि चिकित्सक के पास जब कोई बीमार आए तो उसे ऐसे व्यवहार करना चाहिए, जैसे वह बीमार नहीं है। दवा भले दे, लेकिन व्यवहार ऐसे करे, जैसे वह बीमार नहीं है! क्योंकि उसका व्यवहार दवा से ज्यादा मूल्यवान है। क्योंकि व्यवहार उसके मन में चला जाएगा, दवा केवल शरीर में जाएगी। लेकिन जो फेक-डॉक्टर हैं, धोखे-धड़े वाले डॉक्टर हैं, वे आपको देखकर ही ऐसी घबराहट पैदा करते हैं, जैसे आप बिल्कुल

मरणासन्न हैं। क्योंकि आप तो आप उनके पास आ गए, अब बच जाएंगे, नहीं तो बच नहीं सकते। छोटी सी फुन्सी आपको हो तो वह कैसर जैसी घबड़ाहट पैदा करते हैं, क्योंकि तभी आपका शोषण किया जा सकता है। और फुन्सी भी कैसर हो सकती है अगर भरोसा आ जाय। भरोसा बड़ी चीज है। बहुत बड़ी चीज है, क्योंकि भरोसा काम करना शुरू कर देता है। आपके भीतर एक ख्याल बैठ गया कि मैं बीमार हूँ तो आप बीमार हो जाएंगे।

अगर पश्चिम में डार्विन ने लोगों को समझा दिया है कि आदमी बन्दर की औलाद है और आदमी को अगर भरोसा हो गया, तो पता नहीं आदमी बन्दर की औलाद है या नहीं, आदमी बन्दर की औलाद के जैसा व्यवहार करेगा। यह भरोसा आ जाये, तो यह सवाल बड़ा नहीं है कि वह सच में है या नहीं। अभी तक तय भी नहीं है कि वह बन्दर की औलाद है। लेकिन डार्विन ने जो भरोसा पश्चिम को दिला दिया कि आदमी बन्दर की औलाद है, उसका बड़ा परिणाम हुआ। जब आदमी बन्दर की औलाद है, तो बात ही खत्म हो गई, हमने स्वीकार कर लिया कि हम बन्दर जैसे हैं।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के पत्रचन-सारांश

○ रुचि आनंद



विसर्जन स्वामित्व का अस्वीकार
स्वामित्व में है अहं का विस्तार

कोई भी दर्शन या विचार नया अथवा पुराना नहीं होता। सत्य, जो कल था वही आज भी है और आगे भी रहेगा। संवेदना का जो महत्व कल था, वह कल भी रहेगा। पूंजी और श्रम को लेकर न जाने कब से बहस चल रही है, लेकिन न तो पूंजी की सत्ता हिली-डुली है और न श्रम की महत्ता घटी है। समय के अनुसार हमारी दृष्टि बदलती है और उसमें कुछ नया जुड़ता और टूटता रहता है। हजारों साल पहले प्लेटो की 'रिपब्लिक' में समाजवादी समाज और राष्ट्र-संरचना की रूपरेखा मिलती है।

उससे भी पूर्व हमारे ऋषियों-मनीषियों ने हमारे सामने सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन का आदर्श रखा था। लेकिन आज की एक बड़ी मुश्किल है कि हम उनकी अच्छी बातों को दरकिनार कर उन बिंदुओं पर आ जाते हैं जिन पर विवाद हो सके।

आप पूंजी और श्रम पर बहस तो हो रही है, लेकिन हम श्रम को दोगम दर्जे पर रख समझते हैं कि उसके बिना भी काम चल सकता है, भूल जाते हैं कि तकनीक भी श्रम मांगती है। अर्थव्यवस्था के दो पक्ष हैं, पूंजी और श्रम। इनमें सर्वोच्च स्थान श्रम का है। महावीर ने श्रम को जितनी प्रतिष्ठा दी, उतनी शायद ही किसी ने दी हो। मार्क्स एक उदाहरण जरूर हैं। महावीर ने कहा है, 'जो श्रम करता है, वही श्रमण है। संत है।'

श्रम का जो उद्योगमय रूप है, उसके बारे में महावीर का विचार वही है जो रस्किन, टॉलस्टॉय और गांधीजी का रहा है। महावीर ने श्रावक के लिए कल-कारखानों का वर्जन किया है, क्योंकि वे हिंसा के केंद्र हैं। उनसे संपत्ति का केंद्रीकरण होता है, बेकारी बढ़ती है। इसलिए महा-आरंभ, महा-परिग्रह कह कर वे अपनी साधना-पद्धति में इनका निषेध

करते हैं। इनके स्थान पर उन्होंने छोटे-छोटे उद्योगों को अपने दर्शन में स्थान दिया है। इससे अल्प-आरंभ, अल्प-परिग्रह, धन का विकेंद्रीकरण, आर्थिक समता तथा क्षेत्रीय स्वावलंबन स्वयं निष्पन्न होते हैं। छोटे उद्योगों में भी शोषण न हो इसके लिए उन्होंने सजगता बरतने का निर्देश दिया। संभवतः महावीर ही एकमात्र व्यक्ति थे, जिन्होंने पशुओं पर अधिक भार न लादने तक का निर्देश श्रावकीय आचार संहिता में दिया। मानवीय शोषण को तो प्रायश्चित योग्य बड़ी हिंसा कहा। इसे आज की भाषा में समाजवाद कहा जा सकता है।

समाजवाद का यह रूप भारत में स्थापित होकर यहां के लोक जीवन के लिए वरदान बन सकता है, बशर्ते वह ग्राम-राज्य मूलक, लघु एवं कुटीर उद्योगों द्वारा क्षेत्रीय स्वावलंबन पर आधारित हो। यह गांधी और महावीर का अहिंसा-प्रेम-करुणामय समाजवाद होगा। इसमें स्वामित्व-विसर्जन का भाव होगा। विसर्जन स्वामित्व का अस्वीकार है और स्वामित्व है अहं का विस्तार। वस्तु से अपना स्वामित्व हटाना। साधनों में सबका समान हिस्सा होना।

सहजता विषाद को दूर रखती है और सरलता जीवन को आसान बनाती है
 उस दिन सड़क किनारे बैठने वाले भिखारी

को बेहद आश्चर्य हुआ कि हर रोज प्यार से पैसे देने वाले बुजुर्ग ने आज बे-मन से क्यों भीख फेंक कर दिया। न मेरा मुस्कराकर हाल चाल पूछा और न ठहरकर मेरी दुआ कबूल की। भिखारी विचलित हो गया। सोच लिया कि कल वह उनसे पूछेंगे कि ऐसा किस कारण से किया? जो आदमी इतना सरल और सहज है, उसके जीवन में भी कोई तूफान या संकट आता है क्या? यह तो वर्षों से बने उनके विश्वास पर आघात जैसा है। अगले दिन इंतजार में बैठा था। तभी बुजुर्ग हाथ जोड़े उस भिखारी के सामने खड़े हो गए और कल के अपने व्यवहार के लिए माफी मांगने लगे। भिखारी प्रश्नविहीन हो गया। उसकी नजर में उनका सम्मान और भी बढ़ गया। बुजुर्ग ने कहा- 'कल मैं अपने आप में नहीं था, कुछ हलचल मची थी, इसलिए उखड़ा-उखड़ा था।'

पता नहीं, उन बुजुर्ग की क्या समस्या थी, लेकिन देखने-समझने वालों के लिए तो एक सवाल खड़ा हो ही गया। आप खासकर सहज और सरल आदमी को रोज उसके जिस रूप में देखते हैं, हमेशा उसी तरह से देखने के आदी हो जाते हैं। थोड़ा भी परिवर्तन सिर्फ चौंकाता ही नहीं, प्रियजनों को परेशान भी करता है। सहजता और सरलता प्राकृतिक स्वभाव है, वह

किसी आवरण या मेकअप पर निर्भर नहीं है। आवरण हमेशा दोहरे चरित्र को परिलक्षित करता है। जो है, वह नहीं है और जो नहीं है, वह है। सहज और सरल आदमी के व्यवहार और कर्म में फर्क नहीं होता है। वह जैसा है, वैसा ही दिखता है। इसके सबसे ठोस उदाहरणों में बुद्ध, महावीर, क्राइस्ट, कबीर, दयानंद, विवेकानंद, राजा राममोहन राय, गांधी सहित अनगिनत लोगों के नाम लिए जा सकते हैं। इनमें किसी ने भी दोहरा जीवन नहीं जिया।

सहज और सरल व्यक्तित्व हमेशा हर मन को प्रभावित करता है और रास्ता दिखाता है। उसके अंदर छल-कपट का लेश मात्र नहीं होता। दुनियादारी निभाते हुए भी वह एक अलग छवि के साथ उपस्थित रहता है। सच स्वीकार करें तो

दुनिया और समाज इन्हीं के आदेशों के भरोसे चल रहा है। विचलन या संकट की स्थिति में यही याद आते हैं और हम अपने लिए उनसे रास्ता मांगते हैं। सहजता में संन्यास की वृत्ति होती है जो हर किसी के लिए सम्यक भाव रखती है। उसके आचरण में एक गरिमा और समाज के लिए चिंता होती है। आज इसी वृत्ति की जरूरत है, जो विश्वास का वातावरण बनाए और समाज में प्रदूषण की तरह फैल रही निराशा को निरस्त करे। अगर हम समाज के लिए कुछ करना चाहते हैं तो हमें सहजता और सरलता के गुणों को अपनाना पड़ेगा। सहजता विषाद को दूर रखती है और सरलता जीवन जीने की प्रक्रिया को आसान बनाती है। बस एक पहल की आवश्यकता है।

कविता

○ आचार्यश्री रूपचन्द्र

धर्म को सम्प्रदाय का गुलाम नहीं होने देंगे,
सच को झूठ के हाथों बदनाम नहीं होने देंगे,
हिम्मत के साथ संकल्प लें किसी कीमत पर
रोशनी को अंधेरे के हाथों नीलाम नहीं होने देंगे।

कृतज्ञ भाव

○ संघ पवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री



कृतज्ञ भाव का अर्थ है अपने पर किए गए उपकारों को याद रखना। जो व्यक्ति किए गए उपकारों को भूल जाता है वह कृतघ्न होता है। कृतज्ञ व्यक्ति सहज ही सबका स्नेह-पात्र बन जाता है। कृतघ्न व्यक्ति सबका घृणा-पात्र और निन्दा-पात्र बनता है।

व्यक्ति जब से समाज में जन्म लेता है उस पर समाज के उपकारों का ऋण चढ़ता जाता है। बाल्यावस्था में वह माता-पिता व घर के सदस्यों से उपकृत होता है। खाना-पीना, चलना, बोलना इत्यादि जीवन-विकास के प्रारम्भिक सूत्र वह अपने निकटवर्ती व्यक्तियों से सीखता है। बालक

के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास का पहला श्रेय घर के सदस्यों को ही है।

जीवन में दूसरा मोड़ शिक्षकों के द्वारा आता है। शिक्षक विद्या-गुरु होता है। शिक्षकों का निःस्वार्थ भाव से विद्यादान और छात्रों का सहज भाव से सम्मान-प्रदान परस्पर में आत्मीय भाव के सर्जक हैं। पुराने जमाने में शिक्षकों के प्रति उत्पन्न आदर और समर्पण के भाव रहते थे। इसलिए उस समय के विद्या-गुरु कोरा पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं देते थे, उसका जीवन में व्यावहारिक प्रयोग भी सिखाते थे।

घटना पुरानी है, फिर भी प्रशिक्षण की मनोवैज्ञानिक पद्धति को भली भांति उद्घाटित करने वाली है।

एक राजकुमार बारह वर्ष की पढ़ाई पूरी कर अपने गुरु के साथ घर लौट रहा था। रास्ते में गुरु ने एक क्विण्टल अनाज खरीदा और उस अनाज की पोटली को राजकुमार के सिर पर रख दिया। साथ में कुछ दूसरे विद्यार्थी भी थे।

राजकुमार ने न तो किसी से शिकायत की और न ही बगावत। मौन-भाव से चलता रहा। शरीर से पसीना चूने लगा।

सांस फूल गई। फिर भी कुछ नहीं बोला। घर पहुंचने पर पिताजी ने पूछा- 'बेटे! गुरुजी ने तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया?' कुमार बोला- 'पिताजी! आज तक तो गुरुजी ने मेरे साथ बहुत मृदु व्यवहार किया लेकिन आज मेरे सिर पर एक क्विण्टल अनाज की पोटली रखी। यह मुझे बहुत बुरा लगा।' राजा ने गुरुजी को बुलाकर कहा कि क्या आपको कोई मजदूर नहीं मिला जो इस कोमल बच्चे के सिर पर इतना वजन रखकर जाए? गुरु बोले- 'राजन्! मैंने बारह वर्षों में कुमार को सारी विद्याएं पढ़ाई। केवल एक विद्या बाकी रह गई थी। उसे मुझे पढ़ाना था इसलिए यह वजन इसके सिर पर रखा।' राजा बोला- 'यह कैसे?' गुरु ने कहा- 'आज यह कुमार है कल राजा भी बनेगा। अपराधियों को दण्ड भी देगा। आज अगर इसको इस भार से होने वाले कष्ट का अनुभव नहीं होता तो यह हर किसी के साथ चाहे जितना क्रूर व्यवहार कर सकता था। लेकिन अब नहीं करेगा।' अध्यापक के कठोर व्यवहार के पीछे कितना बड़ा हित था, यह जानकर राजा और कुमार दोनों गद्गद् हो गए और गुरु के चरणों में गिर पड़े। जीवन-निर्माण में गुरु का कितना अचिन्त्य उपकार होता है, यह उनकी समझ में आ गया।

अभिभावक और शिक्षक के बाद मित्रों

के उपकारों का क्रम आता है। मित्र वर्ग कोरा मनोरंजन का ही साथी नहीं है। अध्ययन-कला और आर्थिक प्रतिस्पर्धा मित्रों में ही होती है। संकट के समय हार्दिक व शारीरिक सहयोग मित्रों से ही प्राप्त होता है। मन का ग्रन्थि-मोचन व कुंठा-विसर्जन मित्रों के सिवा कहां हो सकता है? इसलिए समवयस्कों का उपकार भी अविस्मरणीय है।

जीवन का चौथा उपकार स्तम्भ है धर्म-गुरु। धर्म-गुरु केवल सभ्यता, संस्कृति का संरक्षण व विकास ही नहीं करते अपितु सच्चाई, ईमानदारी, सहिष्णुता, सत्यपरता, सन्तुलन और समता भाव आदि आत्मीय गुणों को विकसित करने की भी पद्धति बताते हैं, जिनसे आन्तरिक जीवन का निर्माण होता है और सामाजिक जीवन व्यवस्थित बनता है।

कुल मिलाकर मनुष्य का जीवन बहुत-बहुत उपकारों का ऋणी है। जो व्यक्ति इन उपकारों को भूलने की कृतघ्नता करता है, वह उस बिच्छू की कोटि में आता है जिसको पानी में डूबने से किसी परोपकारी सन्त ने अपने हाथ पर उठाकर बचाया और उसने उसी हाथ पर जहरीला कांटा चुभो दिया।

जंगल में घूमने वाले पशु-पक्षियों का जीवन-निर्माण कौन करता है? यह तर्क

भूल-भरा है। पशु और मनुष्य का जीवन एक कोटि का नहीं है। पशुओं का जीवन खाने-पीने, घूमने और सोने में ही कृतार्थ है। वहां मनुष्य-जीवन के साथ बहुत-सी अपेक्षाएं जुड़ी हुई हैं, जिनका प्रशिक्षण मनुष्य को समाज से ही मिलता है। जिन बच्चों को प्रारम्भ से सामाजिक वातावरण नहीं दिया जाता, वे विकसित नहीं होते तथा

बहरे-गूंगे होते देखे गए हैं। इसलिए समाज के सदस्यों के उपकार अविस्मरणीय हैं। जो समाज के उपकारों को याद रखता है, वह किसी को धोखा नहीं दे सकता। जो किसी को धोखा नहीं दे सकता, वह गलत काम नहीं कर सकता। इसलिए कृतज्ञ भाव को भारतीय परम्परा में महान् आदर्श माना गया है।

गजल

○ आचार्यश्री रूपचन्द्र

जीवन एक वीणा है इस पर गाना सीखो
यह मीठा झरना है अमृत पाना सीखो।।

इस वीणा के तारों, को ढीला मत छोड़ो
ना खींच खींच ज्यादा, इन तारों को तोड़ो
संगीत मधुर इनमें तुम, प्रकटाना सीखो।

इस बगिया में कांटे, गुल भी मुसकाते हैं
जो जैसा बोते हैं, वैसा वो पाते हैं
कर फूलों की खेती, तुम मुस्काना सीखो।

सूरज से सीखो तुम, हो ज्योतिर्मय जीवन
चन्दा से सीखो तुम, उज्ज्वल शीतल तनमन
बादल ज्यों करुणा जल, तुम बरसाना सीखो।

जिसके मिल जाने पर, जग मिल जाए सारा
तेरे में “रूप” छिपा वह, प्रभुवर का प्यारा
भीतर की गंगा में, जीभर नहाना सीखो।



हंस अकेला

{उपन्यास-शैली में आचार्यश्री रूपचन्द्र की जीवन-गाथा}

○ डॉ. विनीता गुप्ता



अनुमति न मिलने से मन मसोस कर रह गया और अपने कमरे की खिड़की पर बैठकर बाहर झाँकता रहा। खिड़की से घर का बाहरी द्वार और आने-जाने वालों को देखता हुआ रूपा बूँदों की टप-टप का आनंद लेने लगा। थोड़ी देर बाद उसने देखा कि घर के मुख्य द्वार से पिताजी निकले। वह जानता था कि पिताजी मंत्री मुनि जी की सेवा में और मुनि सोहनलाल जी के पास जा रहे हैं। रूपा उन्हें तब तक कदम बढ़ाते देखता रहा, जब तक गली के मोड़ पर वे ओझल नहीं हो गए।

जयचन्दलाल के कदम गधैया जी के नोहरे की तरफ तेजी से बढ़ चले थे। गधैया जी का नोहरा सरदारशहर में संतों के प्रवास का स्थान था। नेमिचंद गधैया का परिवार सरदारशहर का बड़ा नामी परिवार था। इस परिवार की भक्ति और धन-शक्ति अपार थी। श्रीचन्द गधैया से लेकर गणेशदास गधैया और अब उनके बेटे नेमिचंद गधैया- यानी तीसरी पीढ़ी संत-सेवा में समर्पित थी। गधैया जी का नोहरा इसका साक्षात् प्रमाण प्रस्तुत करता था। लगभग पाँच हजार गज में फैली यह संत स्थली समवसरण भी कहलाती थी।

गतांक से आगे-

उस दिन शाम को सूरज बादलों की ओट में जल्दी छुप गया था। हल्की बूँदा-बाँदी शुरू हो गई थी। सरदारशहर की प्यासी धरती पर जब बूँदें पड़ीं तो माटी की सौंधी महक चारों ओर फैल गई। रूपा, मुनि सोहनलाल जी पास जाना चाहता था, लेकिन पाँची देवी ने उसे जाने से मना कर दिया यह सोचकर कि भीग जाएगा। कब बारिश तेज हो जाए, कुछ कह नहीं सकते। माटी की महक रूपा को बार-बार मैदान की ओर बुला रही थी। लेकिन माँ की

समवसरण शब्द भगवान महावीर के संदर्भ में प्रयुक्त होता है- वह स्थान जहाँ अरिहंतों के प्रवचन-श्रवण का सभी को समान अवसर मिले। जयचन्दलाल का नोहरे की तरफ झुकाव लगातार बढ़ता जा रहा था। नोहरे की देखभाल का जिम्मा गधैया जी धीरे-धीरे उन्हें सौंपते जा रहे थे। नेमिचंद गधैया और जयचंदलाल दोनों का पारिवारिक सम्बन्ध बहुत करीबी था। नेमिचंद जयचंदलाल की बुआ के बेटे थे। यानी दोनों ममेरे-फुफेरे भाई थे। नोहरे और संत-सेवा में जयचंदलाल का मन इतना रमने लगा कि मंत्री मुनि की सेवा के लिए व्यापार से निवृत्ति ले ली थी।

तेजी से कदम बढ़ाते हुए जयचंद लाल नोहरे में पहुंचे तो देखा मंत्री मुनि, मुनि सोहनलाल और मुनि सुखलाल के साथ एक-दो और भी संत किसी गहन-गंभीर चर्चा में व्यस्त थे। जयचंदलाल भी चुपके से जाकर एक तरफ बैठ गए। चर्चा ज्यादा लंबी नहीं चली। मुनि सोहन लाल का ध्यान जयचंदलाल की ओर गया। मंत्री मुनि अपनी साधना के लिए भीतर चले गए थे। मुनि सुखलाल और बाकी संत भी अन्य चर्चा में व्यस्त हो गए। मुनि सोहनलाल और जयचंदलाल ही उस कक्ष में अकेले रह गए थे। रूपा को आज जयचंदलाल के साथ न देख मुनि जी ने पूछा- 'आज रूपा नहीं आया?'

‘बूँदाबाँदी हो रही थी, वैसे भी शरीर से

कुछ कमजोर है, भीग गया तो बीमार पड़ जाएगा यही सोचकर उसकी माँ ने नहीं आने दिया।’ जयचंदलाल ने रूपा के न आने का कारण बताया। दोनों की चर्चा का विषय रूपा था।

‘एक बात कहूँ जयचंदलाल। मैंने गौर किया है कि तुम्हारा रूपा और बच्चों से बहुत अलग प्रवृत्ति का है। इसके भीतर संत-वृत्ति छुपी है, और मैं बता रहा हूँ, यह बहुत ऊंचा संत बनेगा। अगर यह तुमसे संत बनने के लिए कहे तो मना मत करना।’

मुनि सोहनलाल की बात सुनकर जयचंदलाल बारह साल पीछे लौट गए, जब रूपा का जन्म हुआ था। वह उसकी जन्मपत्री बनवाने पंडित के पास गए थे। पंडित ने कुछ ऐसा ही कहा था और फिर एक दिन कन्हैयालाल दूगड़ ने भी इसके पाँव की रेखाएं देखकर कहा था, ‘यह घर में रहने वाला नहीं है...।’

जयचंदलाल नहीं चाहते थे कि उनका बेटा संतों का बाना पहने। हालाँकि संतों के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी, किन्तु वे उनकी कठिन चर्चा को भी जानते थे। रूपा को वे अपने सामने इस कठिन पथ पर नहीं भेजना चाहते थे। मन में अजब-सी उलझन के साथ वे दूसरे कामों में लग गए। रात को लौटे तो पहले बच्चों के कमरे में गए। उनकी नजर रूपा पर आ कर ठहर गई, जो

गहरी नींद में सो रहा था। वे उलटे पैरों अपने कमरे में लौट आए।

रविवार की छुट्टी थी। दुलीचंद सुबह-सुबह रूपा को बुलाने आ गया। दरवाजे से ही जोर-जोर से आवाज लगा रहा था 'रूपा...रूपा...रूपा...' रूपा को भी दुलीचंद की प्रतीक्षा रहती थी। हाथ में पतंग और चरखी लिए जल्दी-जल्दी वह अपने कमरे की सीढ़ियां उतर रहा था कि सामने जयचंदलाल आ गए। पिता जी को सामने देख एक पल के लिए रूपा रुका और फिर कदम दरवाजे की ओर बढ़ा लिए। 'रूपा...' जयचंदलाल ने आवाज दी तो वह ठिठका। वापस पिताजी के पास आया। 'रूपा तुम पतंग उड़ाना कब छोड़ोगे? इतना समय तुम पतंगबाजी में बर्बाद करते हो। चलो वापस, पतंग रखो और पढ़ाई के लिए बैठो।' पिता का आदेश रूपा टाल नहीं सकता था। मन मसोस कर वापस लौट गया अपने कमरे में। खिड़की से इशारा कर दुलीचंद को जाने के लिए कह दिया और प्रतीक्षा करने लगा, कब पिता जी बाहर जाएं और कब वह पतंग और डोर लेकर रफूचककर हो। इसके लिए रूपा को डेढ़ घंटा प्रतीक्षा करनी पड़ी।

इधर जयचंदलाल घर से बाहर निकले और उधर पाँच मिनट बाद रूपा के कदम पतंग उड़ाने के लिए मैदान की ओर बढ़ चले। शाम को जयचंदलाल लौटे तो उन्हें

खबर लग गई थी कि रूपा मना करने के बावजूद पतंग उड़ाने के लिए गया था। वे उसकी इस आदत से तंग आ गए थे। पचासों बार मना करने पर भी कोई असर नहीं था। रूपा पर तो जैसे पतंग उड़ाने का नशा तारी था। जयचंदलाल जानते थे कि रूपा सीधी तरह से मानने वाला नहीं, इसकी लगाम कसने का एक ही तरीका हो सकता है, किसी संत से इसे पतंग न उड़ाने का नियम दिलवा दिया जाए। लेकिन यह किसी की बात इतनी आसानी से मानेगा नहीं। इसके लिए अचूक तीर साबित होंगे मुनि सोहनलाल। जयचंदलाल को जैसे नुस्खा मिल गया था, रूपा की पतंगबाजी छुड़वाने का।

एक दिन उन्होंने मुनि सोहनलाल से अपने घर आने का आग्रह किया। अगले दिन वे घर आए। वैसे जयचंदलाल के घर में संतों-साधियों का आना नई बात नहीं थी। संतों-साधियों की सेवा का पुण्य उन्होंने खूब अर्जित किया था। मुनि सोहनलाल घर आए हैं, यह देखकर रूपा बहुत प्रसन्न था। रूपा और मुनि सोहनलाल जी कविता के धरातल पर एक-दूजे से गहरे जुड़े हुए थे। रूपा को पतंगबाजी के साथ-साथ कविता से भी बहुत प्रेम था। अपनी पाठ्य-पुस्तकों में छपी सभी कविताएं उसे कंठस्थ थीं। न केवल कंठस्थ थीं अपितु जब वह सस्वर

उनका पाठ करता तो श्रोताओं को बहुत अच्छा लगता।

मुनि सोहनलाल के घर में आने से रूपा को वातावरण में परिवर्तन की अनुभूति हो रही थी। आहार आदि ग्रहण करने के बाद उन्होंने रूपा को अपने पास बुलाया-

‘रूपचन्द्र, तुमको बहुत सारी कविताएं याद हैं, कोई कविता सुनाओ आज।’ बरामदे में पधारे मुनि जी ने रूपा से कहा।

मुनि सोहनलाल के प्रति श्रद्धानत रूपा का मन कविता सुनाने को नहीं था। लेकिन वह उनकी आज्ञा का उल्लंघन भी नहीं कर सकता था। कुछ देर सोच की मुद्रा में रहने के बाद उसने सुभद्राकुमारी चौहान की कविता सुनानी शुरू की-

‘सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी
तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी, फिर से नई
जवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी
कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली
रानी थी...।’

बिना किसी विराम के रूपा ने तीन पन्नों की लम्बी कविता सुना डाली। जयचंदलाल, पाँची देवी और बड़ा बेटा शुभकरण गौर से रूपा के मुँह से कविता सुनते रहे। खत्म होने पर तीनों ने एक-दूसरे को बड़े प्रशंसा भाव से देखा।

‘तुमको तो इतनी लम्बी कविता याद है रूपचन्द्र। बहुत अच्छा। माँ सरस्वती का आशीर्वाद तुम्हें मिले। माँ शारदा तुम्हारी वाणी में विराजें।’ मुनि सोहनलाल ने रूपा से कहा तो वह श्रद्धानत खड़ा हो गया।

‘अच्छा रूपचन्द्र एक बात बताओ, तुम पतंग उड़ाने में इतनी ऊर्जा और समय क्यों बर्बाद करते हो? तुम्हारी ऊर्जा इस तरह व्यर्थ नहीं जानी चाहिए। यह किसी और काम में लगनी चाहिए।’ मुनिश्री कविता के बीच में यह अचानक पतंग की बात कहाँ से ले बैठे? रूपा कुछ समझ नहीं पाया। रूपा क्या जानता था कि यह उसकी आकाश में उड़ान पर लगाम कसने की पृष्ठभूमि बनाई जा रही है। पतंग और आसमान तो उसके जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। पतंग के सहारे उसकी कल्पनाओं को आकार मिलता है। इसके सहारे तो वह आकाश में न जाने क्या-क्या लिख देता है, जिसे सिर्फ वही पढ़ सकता है या फिर हवाएं। घड़ी भर के लिए रूपा वहीं खड़ा फिर आकाश में पहुँच गया। मुनिश्री की वाणी ने उसे आकाश से फिर घर में ला खड़ा किया- ‘रूपा जीवन में हर व्यक्ति को कुछ नियम लेने होते हैं। मैं तुम्हें नियम देना चाहता हूँ कि तुम अब कभी पतंग नहीं उड़ाओगे।’

यह सुनकर रूपा जैसे कटी पतंग की तरह हिचकोले खाता हुआ धरती पर आ गया। वह पतंग उड़ाना कैसे छोड़ सकता

है? उसके साथ ऐसा अन्याय क्यों किया जा रहा है? प्रश्नों की ऊभ-चूभ से रूपा के मानस में घमासान मचा था, लेकिन मुनिश्री की बात मानने के अलावा कोई चारा नहीं था।

‘जी, मुनि जी।’ कहकर रूपा ने सिर झुकाया और फिर कुछ देर वहाँ खड़ा रहकर चला गया। देर तक अपने कमरे की खिड़की से खुले आकाश को ताकता रहा। अब आकाश में पंछी होंगे, सूरज चंदा होंगे, औरों की पतंगें होंगी, सिर्फ उसकी ही पतंग नहीं होगी। यह सोचते हुए बालक रूपा के

गालों पर दो आँसू लुढ़क आए।

जयचंदलाल प्रसन्न थे कि उनकी तरकीब रंग लाई। अब न तो रूपा अपना समय बर्बाद करेगा और न ही छतों पर पतंग उड़ते हुए उसके गिरने या चोट लगने का कोई खतरा होगा। जयचंदलाल निश्चिन्त हो गए। मुनि जी को सादर विदा करते हुए पूरा परिवार स्वयं को धन्य मान रहा था।

x x x

-क्रमशः

लघु-कथा

विनम्रता

सुराही के ऊपर रखी कटोरी ने एक दिन सुराही से पूछा- ‘आप जो भी बर्तन चाहे छोटा हो या बड़ा, उसे पानी से पूरा भर देती है लेकिन मैं हूँ कि सदा आपके सिर पर रहती हूँ लेकिन आप मुझे पूरा भरना तो दूर एक बूंद पानी तक नहीं डालती? यह भेदभाव क्यों? सुराही ने जवाब दिया- ये जो बर्तन है मेरे सामने



नीचे नम्रता से झुकते हैं, तभी तो मैं भी नीचे झुककर इनको पानी से भर देती हूँ और एक तुम हो जो हमेशा घमंड में चूर मेरे सिर पर बैठी रहती हो। तुम झुकना नहीं चाहती, इसलिए बूंद-बूंद पानी के लिए तरसती रहती हो। अगर तुम भी मेरे सामने नम्रता से झुकना सीख जाओगी, तो मैं भी विनम्र बनकर तुम्हें पानी से भर दूंगी। कटोरी को सुराही का मतलब समझ में आ गया और उसके बाद उसने कभी यह प्रश्न सुराही से नहीं किया।

प्रस्तुति : सुशांत जैन

एक तथ्य और

○ साध्वी मंजूश्री

कहते हैं स्टालिन किसी निश्चित कमरे में कभी नहीं होता था। उसकी पत्नी भी जब स्टालिन से कुछ बात करना जरूरी समझती तो उसे खोजना पड़ता था कि इस समय स्टालिन कहां हो सकते हैं? उसके जितने कमरे थे, सब पर संगीन पहरा होता था। स्टालिन जितने संगीन पहरों में रहा, उतना संगीन पहरा कहा जाता है, धरती पर किसी व्यक्ति पर कभी नहीं रहा। उसके सभी कमरे एक-जैसे थे। सब में समान डेकोरेशन व सुविधा उपलब्ध थी। एक कमरे से अन्य कमरों में जाने की विधिवत व्यवस्था थी। उसके अंग-रक्षक व पहरेदारों को भी झटपट निर्णय करने में कठिनाई होती थी इस समय स्टालिन कहां होंगे।

उसने एक बार फिर से एक आदेश दिया- 'तुम आधी रात के समय मेरे सामने उपस्थित होकर दिखलाओ।'

मैसिंग ठीक आधी रात बीतने पर स्टालिन के सामने खड़ा हो गया। स्टालिन कांप उठा। मनस्थ होने पर प्रेमपूर्ण आग्रह करते हुए मैसिंग से पूछा- 'सच बताओ, मेरे सभी कमरों के संगीन पहरों को भेद कर तुम अन्दर मेरे सामने कैसे आ खड़े हुए?'

मैसिंग ने साफ शब्दों में निर्भय होकर

कहा- 'मैंने और कुछ नहीं किया। केवल 'आई एम बेरिया- आई एम बेरिया' मुंह से बोला- 'तुम्हारे सैनिक/रक्षक/द्वार रक्षक सेल्यूट मारने लगे। बस मैं मजे-मजे में तुम तक पहुंच आया।'

स्टालिन ने उस पर लगाए सभी प्रतिबन्ध हटा लिये।

मैसिंग की घटनाएं मात्र उदाहरण स्वरूप दी हैं। मेरे स्मृति के कोषागार में विविधानेक जप-साधकों की ऐसी घटनाएं हैं जो हृदय-क्षेत्र से स्मृति की ऊंचाई तक अमरवल्लरी की तरह चढ़ चुकी हैं। मैं उन घटनाओं को न हृदय से उखाड़ पाती हूं, न स्मृति के कोषागार से पोंछ ही पाती हूं। व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क में आये अनेक साधकों ने अनेक प्रसंगों पर उस घटनाओं को सुना है, विचार-चर्चा भी की है। समर्थन और विरोध दोनों प्रकार दुहराए हैं पर उक्त मैसिंग की घटनाएं तथा साधकों के जीवन में घटी प्रत्यक्ष घटनाएं अमरवल्लरी बनी ज्यों की त्यों सुरक्षित हैं। मेरो जप साधना में ये बाधक नहीं सहयोगी बनी हुई हैं तो मैं क्यों इन घटनाओं पर पोंछा लगाऊं और क्यों बोझ अनुभव करूं। जागतिक झंझावात व अनास्थाएं अमरवल्लरी को हिला तो सकते हैं पर वल्लरी को उखाड़ नहीं सकते।

कर्ण का मैत्रीभाव

कृष्ण ने युद्ध को रोकने की भरसक कोशिश की पर सब बेकार। वह संधि प्रस्ताव लेकर गए पर दुर्योधन ने संधि पर विचार करने की बात तो दूर, उन्हें बंदी बनाने की (असफल) कोशिश की। धृतराष्ट्र कहते-कहते थक गये कि कृष्ण को बंदी बनाना आग को कपड़ों में छिपाने के बराबर है। गांधारी, भीष्म, विदुर सब समझा-समझा कर हार गए पर दुर्योधन कैसे मानता? विनाश काल में सचमुच उसकी बुद्धि विपरीत हो चुकी थी।

कृष्ण के उस प्रस्ताव को भी दुर्योधन ने ठुकरा दिया जिसमें पांडवों को केवल पांच गांव देने का परामर्श था। उसने तो गर्व भरी वाणी में यह निर्णय भी दे दिया कि युद्ध के बिना पांडवों को पांच गांव तो क्या, सूई की नोक के बराबर भूमि भी नहीं दी जायेगी।

कृष्ण संधि वार्ता में असफल होकर हस्तिनापुर से बाहर आए तो उनके साथ रथ में कर्ण बैठे थे। कर्ण को देख उन्हें लगा जैसे किसी रहस्यपूर्ण मार्ग का द्वार मिल गया हो। उन्होंने सोचा, 'कर्ण की तो

दुर्योधन के अहंकार का अवलम्ब है, उसी के पराक्रम के बल पर दुर्योधन की समस्त संभावनाएं टिकी हैं, उसी के भरोसे उसने अर्जुन, भीम, सात्यकि जैसे योद्धाओं से जूझने का दुस्साहस किया है। ऐसा सोचते-सोचते कृष्ण कर्ण के चेहरे की ओर देख कर बोले- 'कर्ण जानते हो कि तुम सूतपुत्र नहीं सूर्यपुत्र हो।'



कर्ण बस मुस्कराकर रह गए पर उस मुस्कराहट में पीड़ा छिपी थी, एक ऐसी पीड़ा जो आदमी को भीतर तक झकझोर कर रख देती है।

कृष्ण दोबारा बोले- 'विश्वास करो, तुम कौमार्यावस्था में जन्मी कुंती की प्रथम संतान हो।'

कर्ण ने विनीत स्वर में कृष्ण की बात का अनुमोदन करते हुए कहा- 'जनार्दन! मुझे आप पर पूर्ण विश्वास है। मुझे भगवान सूर्य और महारानी कुंती ने भी स्वयं एंसा संकेत किया है। पर मधुसूदन, जिन्होंने मुझे पाला है, अपनी बांहों में झुलाया है, हर सांस मेरी तकलीफों को ढोया है, वे ही अधिरथ और राधा अब मेरे माता-पिता हैं?'

कृष्ण उसकी पीड़ा को भांप गए, इसलिए उसे आश्वासन देते हुए उन्होंने कहा- 'तुम प्रथम पांडुपुत्र हो, युधिष्ठिर से पूर्व तुम्ही राज्य के अधिकारी हो, तुम चाहो तो युधिष्ठिर तुम्हारे युवराज होंगे, अर्जुन, भीम तुम्हारे सिर पर चंवर झुलाएंगे, नकुल, सहदेव, द्रौपदी के पांचों पुत्र अभिमन्यु और मैं सब तुम्हारे अनुगामी होंगे।

कृष्ण कर्ण के अन्तस् के द्वंद्वको समझ गए पर उस अनिश्चय की स्थिति से निकालने के उद्देश्य से बोले- 'तुम्हारे पांडुपुत्र होने के रहस्य से जब समस्त कुरुवंशी अवगत होंगे तो वे तुम्हें गलत न समझेंगे और दुर्योधन कौरवपक्ष को कमजोर देख युद्ध से विमुख हो जाएंगे।'

कर्ण के चेहरे पर गंभीरता उभर आयी। वह कृष्ण से विनम्र वाणी में बोले- 'वासुदेव! यह रहस्य युधिष्ठिर को मत कहिएगा। वह अत्यंत धर्मनिष्ठ हैं। वह तो स्वप्न में भी किसी के अधिकार को हड़पने की नहीं सोच सकते। अगर वह इस रहस्य को जान गए तो चुपचाप समस्त राज्य सम्पदा मुझे सौंप देंगे।' बोलते-बोलते कर्ण भावुक हो उठे।

'यही तो मेरी मनोकमना है कि यह धरती रक्तचाप से बचे, यह योद्धाओं की लाशों से न ढके, इस पर मांसभक्षी गिद्ध, कौवे न मंडरायें।' कृष्ण की आंखों में चमक थी।

'नहीं! नहीं!! अगर ऐसा हुआ तो बहुत गलत होगा। आप का मनोरथ कैसे फलीभूत होगा- कर्ण की बातचीत में असहमति थी।

'अंगराज स्पष्ट समझाइए'- कृष्ण जिज्ञासु हो उठे थे।

'मैं वचनबद्ध हूँ दुर्योधन से, उसके मित्रभाव से, उसकी सुहृदयता से। इसलिए मेरा तन, मन, धन उसके लिए समर्पित है। यदि युधिष्ठिर मुझे समस्त राज्य सम्पदा दे देंगे तो वह समस्व वैभव मैं दुर्योधन को सौंप दूंगा। मुझे दुनिया का वैभव ऐश्वर्य दुर्योधन की मित्रता के समक्ष निरर्थक लगता है।

'अंगराज! कोई भी नीति शाश्वत नहीं होती यदि वह समय और प्रसंग के सवालियों के अनुकूल न हो। मैं चाहता हूँ इस विनाश को रोकना। पांडवों को उनका हक सौंपना अन्याय और अधर्म का प्रतिरोध करना इसलिए तुम्हारे समक्ष यह प्रस्ताव रखा था। दुर्योधन का विनाश तो होना ही है। उसे भीष्म, द्रोण और तुम भी कैसे रोक सकोगे? सहसा कृष्ण बिल्कुल चुप हो गए और भृकुटी तान कर्ण से बोले- 'तुम जानते हो इस युद्ध के अन्त को?'

'हां पांडवों की विजय और...।' 'और अभिप्राय' - कृष्ण सोच में पड़ गए थे। और से अभिप्राय है असंख्य योद्धाओं का संहार अनाथ रोते-बिलखते बच्चे,

शोकाकुल विधवाओं का करुण विलाप।

कृष्ण की ओर से दृष्टि बदलकर कर्ण ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा- 'दुर्योधन से मुझे मान-सम्मान मिला, अंगदेश का वैभव मिला, क्षत्रियों से मुकाबला करने का मौका मिला। मैंने दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि, विकर्ण आदि के बीच बैठे हजार बार दुर्योधन के मुख से सुना है कि कर्ण अर्जुन को, दुर्योधन भीम को, दुःशासन नकुल, सहदेव को, भीष्म एवं द्रोण तमाम पांडव सेना को कुचल कर रख देंगे। इसलिए कौरवों को इस स्थिति में छोड़ना मेरे मैत्री भाव के विरुद्ध होगा।'

कृष्ण में कर्ण का पूर्ण विश्वास था कि वह युधिष्ठिर से राज्य लेकर उसे सौंप भी देंगे। पर कर्ण सोचता था कि क्या यह उसकी मित्रता के लिए शोभनीय होगा? उसकी वीरता पर, उसके नाम पर, उसके आचरण पर, उसके मित्रभाव पर सब टीका टिप्पणी करेंगे।

कृष्ण को विश्वास था कि कर्ण की अमोघ शक्ति पर, उसके अद्भुत पराक्रम पर और उसकी दानवीरता पर। वह यह भी जानते थे जैसे पांडवों की शक्ति के स्रोत कृष्ण हैं उसी प्रकार कौरवों की समस्त आशाओं के केन्द्र कर्ण हैं। इसलिए वह एक अंतिम प्रयास करने की दृष्टि से बोले- 'महारानी कुंती तुम्हारे जन्मकाल पर विवश

थीं। तुम्हें छोड़ने का परामर्श अकेले उनका नहीं बल्कि भगवान सूर्य का भी था। इसकी सबसे बड़ी वजह लोकलाज ही थी।

कृष्ण ने देखा कि यह सुनकर कर्ण के नेत्रों में अश्रु छलक उठे हैं, फिर भी उन्होंने तर्कयुक्त वाणी में प्रश्न किया- 'जनार्दन! शस्त्र कौशल परीक्षण के वक्त कुंती चुपचाप रही और मैं सूतपुत्र बना रहा, द्रौपदी स्वयंवर के अवसर पर मैं पुनः अपमानित हुआ। वहां तो आप स्वयं विराजमान थे पर आपने भी कोई भेद न खोला। अब जब मेरी शक्ति अमोघ है और मैं कौरवों की सेना का रक्षाकवच हूं तब महारानी कुंती ने पुत्रों की रक्षा का वचन लिया है और भगवान सूर्य ने भी कुंती के प्रस्ताव को अवसरानुकूल कहा है। हे माधव! क्या यही धर्माचरण है? ऐसा क्यों हुआ? मुझे इस विषय के दौर में बार-बार क्यों गुजरना पड़ा? कृष्ण कहो, कुछ तो कहो?

दुर्योधन अहंकारी है, ईष्यालु है और मरणासन्न है। समस्त कौरव सेना और राज समुदाय उसी की वजह से मृत्यु मुख में उतर जायेगा। युद्धभूमि में अर्जुन कर्ण को, शिखंडी भीष्म को, धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य को मार गिरायेंगे। भीम की गदा दुर्योधन की जांघों को विदीर्ण करेगी, दुःशासन के रक्त से पांचाल पुत्री द्रोपदी केश संवारेगी, धृतराष्ट्र राज्य सिंहासन के अपदस्थ होंगे।

यह जानकर भी न मैं युद्ध से अलग हो सकता हूँ और न दुर्योधन को ही युद्ध से विमुख कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ कि जिधर कृष्ण हैं उस पक्ष की विजय होगी? ऐसा कहकर कर्ण मौन हो गए जैसे उनके पास अब करने को कुछ शेष न हो।

कृष्ण स्थिति समझ चुके थे और कर्ण के भीतर का, उसकी मानसिकता का उन्हें पूर्ण ज्ञान हो चुका था। इसलिए उन्होंने कर्ण

की पीठ थपथपाते हुए कहा- 'तो युद्ध की तैयारियाँ कीजिए, अंगराज।'

कर्ण रथ से उतर गए और देखते रहे कृष्ण के रथ के पहियों से, घोड़ों के खुरों से उड़ती धूल को, धीरे-धीरे कृष्ण, उनका रथ के पहियों से, खुरों से उड़ती धूल तो ओझल हो गई पर कर्ण सोचते रहे- कृष्ण पर, महाभारत प्रणेता कृष्ण पर।

-प्रस्तुति : साध्वी वसुमति

कविता

धूप में बैठी लड़की

धूप में बैठी लड़की
सोचती है
धूप में नहाती
किरणों के बारे में
उसके रंगों के बारे में,
रंग जो दिखाई नहीं देते
पर हर पल कराते हैं
अपने होने का एहसास।

रंग-जिसका संतुलन
बिगड़ने पर
किरणें छोड़ देती हैं
अपना प्राकृतिक स्वरूप!

धूप में बैठी लड़की
सोचती है



माँ ने कहा था
किरणों का कोई रंग नहीं होता
इसीलिए सभी रंग रहते हैं
उसमें समाहित।

धूप में बैठी लड़की
अपने रंगों की मस्ती में खोई
अपने ही रंगों को
भूल जाना चाहती है
बन जाना चाहती है
एक किरण
अपने लिए
अपने परिवसर के लिए।
हाँ- बन जाना चाहती है
एक किरण!

-विष्णु सक्सेना

ऐसे बच्चों की हमें जरूरत है

○ आनंद भारती

धूप चटक थी, गनीमत बस यही थी कि गर्म हवा नहीं चल रही थी। मैं दिल्ली के सराय काले खां स्थित मानव मंदिर आश्रम के प्रांगण में खड़ा था। आम परंपरा से हटकर इस आश्रम की देखभाल का सारा काम जैन साधवियां करती हैं। उसी आश्रम से सटा हुआ है सेवाधाम अस्पताल, जहां बीमारियों का इलाज आयुर्वेद और नेचुरोपैथी से होता है। मैं वहीं डॉक्टर से मिलने गया था, लेकिन वे उस वक्त अस्पताल में नहीं थे। शायद कहीं विजिट पर निकले थे। मजबूरी में मैं एक पेड़ की ओट में खड़ा होकर इंतजार करने लगा, ताकि अपनी बीमार मनोदशा को छिपा सकूं। चेहरे पर तकलीफ के लक्षण बार-बार आ रहे थे। मैं अपनी उहापोह में वहां खड़ा था कि वहां से गुजर रही एक साध्वी ने कहा, 'डॉक्टर के आने में वक्त है, आप चाहें तो यहां के बच्चों के साथ कुछ क्षण बिता लें।'

उस साध्वी के संकेत को मैं तब समझ नहीं पाया था, लेकिन बच्चों के बीच कुछ देर खड़े रहने के बाद लगा कि मेरे अंदर कुछ घटित हो रहा है। ये वे लड़के-लड़कियां हैं जो दुनिया की भाषा में अनाथ या बेसहारा हैं, लेकिन उनकी खुशी को देखकर नहीं लगा कि वे किसी बोज़ तले दब कर जी रहे हैं।

कोई खेल रहा था तो कोई सफाई-कार्य में व्यस्त था। कुछ बच्चे पेड़ों और पौधों की क्यारियों को पानी से सींच रहे थे तो कुछ गमलों का ध्यान रखने में लगे थे। यह सब देखकर मैं सोच में पड़ गया कि आश्रम बच्चों की जिंदगी को संवार रहा है या बच्चे ही आश्रम को एक सार्थक रूप दे रहे हैं। ये सभी बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ाई कर रहे हैं और अपने रिजल्ट से स्कूल और आश्रम, दोनों का नाम रोशन कर रहे हैं।

उस चहलकदमी के दौरान एक बहुत भावुक करने वाला दृश्य सामने आ गया। कुछ लड़कियां एक बुजुर्ग और बीमार-लाचार साध्वी को व्हीलचेयर पर सैर कराती हुई दवा-पानी पिलाने की हर संभव कोशिश कर रही थीं। बीमार साध्वी बार-बार किसी नन्हे बच्चे की तरह हाथ झटककर मुंह बंद कर ले रही थीं। चूंकि जैन साधवियां और साधु सूर्यास्त के बाद कुछ भी मुंह में नहीं लेते इसलिए लड़कियां उन्हें जल्दी से दवाई खिलाकर पानी पिला देना चाहती थीं। लड़कियां मां जैसी भूमिका में आ गई थीं। जैसे माएं अपने बच्चों को मनुहार करके, कभी चंदा मामा तो कभी किसी का नाम ले-ले कर खिलाती-पिलाती हैं, वैसे ही लड़कियां भी कर रही थीं। कभी

इसके नाम पर एक घूंट तो कभी उसके नाम पर एक घूंट।

यह सिलसिला देर तक चला। न साध्वीजी का इनकार खत्म हो रहा था और न लड़कियां धैर्य छोड़ने के लिए तैयार थीं। मेरे पूछने पर कि आपलोग इनकी जिद से तंग नहीं आ जाती हैं। उन्होंने कहा, 'हम लोग किसी न किसी कारण से अपनी मां से दूर रहे हैं लेकिन इस बड़ी मां (साध्वीजी) ने हमारा जीवन बनाया है, हर पल हमारी

चिंता की है। आज हम सब जो भी हैं, इन्हीं के कारण हैं। हम सभी ने अभी तक जो भी अच्छा सीखा है, इन्हीं से सीखा है। आज इनको हमारी जरूरत है...।' मैं हतप्रभ था। जिन्हें मैं अनाथ समझ रहा था, वे कम उम्र में ही इतनी समझदार हो गई हैं। मैं तो डॉक्टर से अपने डिप्रेशन का इलाज पूछने गया था, लेकिन जाने-अनजाने उन लड़कियों और बच्चों ने जीवन को सार्थक रखने का पाठ पढ़ा दिया।

चुटकुले

1. जय वीरू से- जीवन में कई बार छोटी-छोटी चीजें भी बहुत तकलीफ देती हैं।

वीरू- मैं छोटी-मोटी परेशानियों से नहीं डरता।

जय- फिर किसी दिन थोड़ी देर के लिए एक सुई के ऊपर बैठ कर देख लेना।

2. बॉस- क्या तुम मृत्यु के बाद जीवन पर यकीन करते हो?

कर्मचारी- जी नहीं, सर।

बॉस- तो करने लगो जिस दादी की मौत पर तुमने छुट्टी ली थी, उसका फोन तुम्हारे जाने के बाद आया था।

3. टीचर- चिंटू मैप में देखो और बताओ अमेरिका कहां है?

चिंटू- मैडम् ये रहा यहां।

टीचर- एकदम सही। क्लास, अब बताओ अमेरिका को किसने खोजा?

बच्चे- चिंटू ने।

4. सोनू- जो मेरी इच्छा पूरी करेगा, उसे मैं 1 लाख रुपये दूंगा।

मोनू- बोल क्या इच्छा है तेरी?

सोनू- मुझे 2 लाख रुपये चाहिए।



प्रस्तुति : रोहन

कामवासना हावी क्यों हो जाती है?

○ सद्गुरु जग्गीवसुदेव

हम लोग अक्सर किसी न किसी चीज से छुटकारा पाने के बारे में सोचते रहते हैं। आप जोर जबरदस्ती करके किसी चीज से छुटकारा नहीं पा सकते। अगर आप जबरदस्ती किसी चीज को छोड़ना चाहें, तो यह किसी और रूप में उभर कर सामने आ जाएगी, और आपके भीतर कोई दूसरा विकार पैदा कर देगी। अगर आप किसी चीज को छोड़ने की कोशिश करेंगे, तो वह चीज पूरी तरह से आपके दिमाग व चेतना पर हावी होने लगेगी। लेकिन उस चीज की तुलना में अगर आप कुछ ज्यादा महत्वपूर्ण चीज को पा लेते हैं, तो पुरानी चीज कम महत्व की बन जाती है। महत्व कम होने से वह खुद-ब-खुद आपसे छूटने लगती है। क्या आपने कभी गौर किया है कि जो लोग बौद्धिककार्यों में ज्यादा डूबे रहते हैं, वे सेक्स करने की बजाय कोई किताब पढ़ना ज्यादा पसंद करते हैं।

आज आपकी जानकारी में काम-सुख ही सबसे बड़ा सुख है। आपकी



काम-वासना के तीव्र होने का यही कारण है, है न? अगर कोई आपसे कहता है कि 'यह बुरी चीज है, इसे छोड़ दो।' तो क्या वाकई आप इसे छोड़ पाएंगे? लेकिन अगर आप इससे भी बड़ी चीज का स्वाद चख लें, तब यह अपने आप आपसे छूट जाएगी। फिर इसे छोड़ने के लिए आपसे किसी को कुछ कहना नहीं पड़ेगा। इसके लिए आपको अपने जीवन का थोड़ा समय ऐसी दिशा में लगाना होगा, जिससे कि एक बड़ा आनंद आपके जीवन का हिस्सा बन सके। अगर आपको जीवन में अपेक्षाकृत ज्यादा आनंदित करने वाली चीज मिल जाए, तो जाहिर है कि छोटे

सुख की इच्छा अपने आप ही मिट जाएगी। सबसे अच्छी बात यह होगी, कि छोटे सुख की चाहत आपके कोशिश करने से नहीं मिटी, बल्कि रुचि कम हो जाने से आपने छोटे सुख को चाहना बंद कर दिया है। आपकी रुचि इसलिए कम हो गयी, क्योंकि अब आपने कोई बड़ी चीज खोज ली है। बस इतनी सी बात है। जब आप बच्चे थे,

तब जो चीजें आपके लिए बेशकीमती होती थीं, वे बड़े होने पर आपसे छूट गईं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उम्र के साथ आपने जीवन में कुछ ऐसी चीजें पाईं, जिन्हें आप ज्यादा बड़ा समझने लगे। अब भी यही बात लागू होती है। अगर आपको जीवन में ज्यादा तीव्रता वाली, ज्यादा गहरा सुख और आनन्द देने वाली चीज मिल जाए, तो जाहिर है कि ये चीजें अपने आप आपसे छूट जाएंगी।

कामवासना आपके व्यक्तित्व का बस एक छोटा सा हिस्सा है। बेवकूफी भरी नैतिकता और इसे जबरदस्ती छोड़ने की कोशिशों में पड़ कर लोग और ज्यादा कामुक हो गए हैं। आप जिसे मर्द या औरत कहते हैं वह, बस एक छोटे से शारीरिक अंतर की बात है, जो एक खास प्राकृतिक प्रक्रिया को पूरा करने के लिए है। आखिर हमने शरीर के एक अंग को इतना अधिक महत्व क्यों दे रखा है? शरीर का कोई भी अंग इतना ज्यादा महत्व दिए जाने योग्य नहीं है। अगर शरीर के किसी अंग को इतना अधिक महत्व देना ही हो, तो महत्व दिमाग को देना चाहिए, न कि जननांग को। दुर्भाग्यवश, हर तरफ से मिलने वाली कुछ बेवकूफी भरी सीख जैसे- 'आपको पवित्र रहना चाहिए, आपको इसके बारे में नहीं सोचना चाहिए'- ने मामले को उल्टा कर दिया है, लोग सिर्फ इसी के बारे में सोचने

लग गए हैं। अगर आप जीवन को वैसे ही देखें, जैसा कि यह वास्तव में है, तो कामवासना आपके जीवन में बस उतनी ही छोटी जगह पाएगी, जितनी उसे मिलनी चाहिए। तब यह आपके जीवन में इतनी बड़ी चीज नहीं रहेगी, और होना भी यही चाहिए। जगत के सभी जीवों के साथ ऐसा ही होता है। जानवर हर वक्त इस बारे में ही नहीं सोचते रहते। जब उनमें कामोत्तेजा पैदा होती है, तभी वे इसके बारे में सोचते हैं, अन्यथा वे हर समय नहीं सोचते रहते कि- कौन नर है कौन मादा! सिर्फ इंसान ही ऐसा जीव है, जो इस सोच में हर वक्त अटका हुआ है। एक पल के लिए भी इसे न भूल पाने की वजह, उसमें भरी हुई वे मूखर्तापूर्ण सीखें और नैतिकता के पाठ हैं, जिनका जीवन से कोई लेना देना नहीं है।

अगर लोग जीवन को वैसे ही देखें, जैसा कि यह वास्तव में है, तो अधिकतर लोग बहुत थोड़े समय में ही कामवासना से बाहर आ जाएंगे। बहुत से लोग इसमें पड़े बिना ही इससे बाहर आ जाएंगे। बात सिर्फ इतनी है कि जीवन का फोकस ठीक न होने की वजह से हर चीज बिगड़ गई है, और बढ़ा-चढ़ा दी गई है। वरना आप देखते, कि ज्यादातर लोगों की इसमें कोई खास रुचि ही नहीं होती, या फिर इसमें उनकी रुचि सिर्फ उतनी होती जितनी जरूरी है।

भयानक गर्मी और लू से बचने के लिए...

प्रकृति हर प्राकृतिक मुसीबत से बचने के रास्ते भी खुद ही सुझाती है। वे खान-पान, फल और जीवनचर्या के रूप में होते हैं। अगर प्राकृतिक ढंग से किसी प्राकृतिक आपदा का मुकाबला किया जाए तो सफल परिणाम पाना संभव है। अतः इन आग बरसते दिनों में उन फलों और सब्जियों को खाएं जो खासतौर पर गर्मी से मुकाबला करने की आपको क्षमता दें। मसलन खरबूज, तरबूज, आम, बेल जैसे फल इस आग बरसाती गर्मी से बचाव का कारगर जरिया है। जलजीरा, कच्चे आम का पन्ना, प्याज, मट्ठा, दही खाने-पीने की ये वे चीजें हैं जो हमें भयानक गर्मी और लू से बचने की और उनसे मुकाबला करने की क्षमता प्रदान करती हैं इसलिए इन दिनों अपने खानपान के मेन्यू में इन चीजों को जरूर शामिल करें। गर्मी के दिनों में खासकर ऐसी गर्मी के दिनों में जब भयानक लू चल रही हो। वैसे तो तमाम संक्रामक बैक्टीरिया व कीटाणु खुद ही खत्म हो जाते हैं फिर भी इन दिनों कई तरह की बीमारियां भी घेर लेती हैं, क्योंकि गर्मी में खाना बहुत जल्दी खराब हो जाता है।

बहरहाल गर्मी के रोगों से बचने के लिए एक घंटा बासी खाने से भी बचें। खूब पानी पीएं अगर सादा पानी-पीना संभव न हो तो जूस और शर्बत पीएं बशर्ते मधुमेह के रोगी न हों। गर्मी के रोगों से बचने के लिए इन दिनों सुबह मुंह धोने के बाद सबसे पहले एक गिलास नींबू पानी जरूर पीएं, इससे चेहरे की चमक बनी रहेगी। साथ ही दिन में 10 से 15 गिलास पानी पीने की कोशिश करें। इससे शरीर में पानी की कमी नहीं हो पाएगी। नशा करते वक्त भले ही गर्मी का अहसास न हो, लेकिन हकीकत यह है कि गर्मी में नशीले पदार्थ और ज्यादा गर्मी बढ़ा देते हैं। सिगरेट, शराब, चाय, कॉफी, मसालेदार तली-भुनी चीजें इन सब से गर्मी का असर कई गुना ज्यादा बढ़ जाता है इसलिए इनके सेवन से इन दिनों परहेज करें। इनकी जगह कच्ची सब्जियों, रेशेदार फलों को अपनी डायट का अहम हिस्सा बनाएं। गर्मी को दिनचर्या के जरिये भी काबू में किया जा सकता है। घोर गर्मी के दिनों में एक बार मालिश अवश्य करें। जैतून या नारियल के तेल का प्रयोग ज्यादा उपयोगी साबित होता है। इन



तेलों के इस्तेमाल से शरीर की लोच लचक बरकरार रहती है। शरीर लचीला और कोमल बना रहता है। इन दिनों संभव हो तो दो बार नहाएं नहीं तो एक बार तो अवश्य ही नहाएं। सुबह जल्दी नहाने की कोशिश करें और सुनिश्चित करें कि जिस पानी से नहा रहे हैं वह ठंडा हो भले ही चिल्ड न हो ताकि नहाते ही शरीर में तरावट आ जाए। अगर सुबह व शाम नहाते हैं तो गर्मी से बचने में सहायता तो मिलती ही है, कार्यक्षमता भी बढ़ती है और शरीर चुस्त-दुरुस्त भी बना रहता है। जब आसमान से आग बरस रही हो तो गहरे मेकअप से दूरी बना लें क्योंकि गहरा मेकअप न सिर्फ गर्मी के एहसास को बढ़ा देता है अपितु एक अजीब तरह की बेचैनी भी लाता है। कई बार ऐसा मेकअप पसीने के चलते बड़ी असहज स्थिति पैदा कर देता है। इन दिनों पसीना सूब आने के कारण मेकअप के बह जाने की आशंका रहती है और अगर ऐसा होता है तो खुबसूरत दिखने की ख्वाहिश एक समस्या बन जाती

है। हां, इन दिनों हल्के मेकअप से तौबा न करें ये आपके रूप को निखारेगा।

गर्मी से बचाव में सजगता का भी अपना महत्वपूर्ण योगदान है। गर्मी के दिनों में खासकर जब लू थपेड़े चल रहें हों तो अचानक बहुत गर्म जगह से तुरंत ठंडी जगह पर न जाएं और इसी तरह ठंडी जगह से अचानक गर्म जगह में न जाएं। कहने का मतलब यदि कई घंटों से घर के बाहर सड़क पर हैं तो सीधे ए.सी. रूम में न जाएं बल्कि कुछ देर शरीर को नार्मल होने दें फिर ए.सी. रूम में प्रवेश करें। अगर अचानक सर्द से गर्म और गर्म से सर्द जगह पर जाएंगे तो गर्मी लगने और जुखाम होने का डर बना रहेगा। ऐसे में लू भी लग जाती है। इन दिनों जितना जरूरी है सिर को सीधे सनस्ट्रोक से बचाना, उसी तरह नंगे पैरों को भी सीधे गर्मी के संपर्क में न आने दें। तपती हुई जमीन पर नंगे पैर चलने से भयानक गर्मी लग जाती है। इसलिए नंगे पैर बिल्कुल न रहें।

—योगी अरुण तिवारी

पूज्य आचार्यवर की विदेश-यात्रा

हर वर्ष की भांति इस बार पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी अपने शिष्य योगी अरुण तिवारी के साथ 26-27 जून 2017 को विदेश-यात्रा के लिए प्रस्थान करेंगे। करीब 2 महिना और दस दिन की अमेरिका-यात्रा में आप पांच दिवसीय जैना-कन्वेंशन के अलावा न्यूजर्सी, न्यूयार्क, बोस्टन-पेन्सिलवेन्विया, बरमोंट, ह्युष्टन, लॉस एंजिलिस के प्रवचन-योग कार्यक्रमों के पश्चात् सेन् होजे, जैन सेंटर में आपके सान्निध्य में पर्युषण-महापर्व की आराधना होगी। 7-8 सितम्बर 2017 भारत-वापसी की संभावना है।

मासिक राशि भविष्यफल-जून 2017

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अवरोधों के चलते तथा अथक परिश्रम के पश्चात निर्वाह योग्य आमदनी कराने वाला है। ख्याल रखें, कोई भी कार्य रिस्क लेकर न करें। सट्टे आदि से बचें। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखना मुश्किल होगा। सन्तान की ओर से कोई चिन्ता परेशान कर सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

वृष- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह धन लाभ दिलाने वाला है। किसी नई योजना का क्रियान्वयन होने से खुशी होगी। रुपये के लेन-देन में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। कुछ जातकों का पुराना फंसा हुआ पैसा पट सकता है। परिवार में सामन्जस्य स्थापित करने में कामयाब होंगे।

मिथुन- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर सीमित आय वाला तथा अधिक व्यय कराने वाला रहेगा। हालांकि कुछ प्रयास सार्थक होंगे किन्तु कोई न कोई मानसिक परेशानी बनी रहेगी। कोई निकटस्थ व्यक्ति भी धोखा दे सकता है। परिवार में सामन्जस्य बिठाना मुश्किल होगा।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह पूर्वार्ध में कतिपय अशुभफल दायक तथा उत्तरार्ध में शुभफलदायक है। नौकरी पेशा जातकों को अपनी पदोन्नति के प्रति आशान्वित रहना चाहिए। विशिष्ट लोगों के सम्पर्क से कार्य बनेंगे। परिवार में सौहार्द बना रहेगा।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर सामान्य फलदायक ही कहा जायेगा। आय-व्यय बराबर रहने वाले हैं। परिश्रम साध्य लाभ अवश्य मिलेगा। किसी नई योजना का सूत्रपात होगा। विदेश से कारोबार करने वालों के लिये समय अनुकूल कहा जा सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कन्या- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय कम दिलाने वाला तथा व्यय अधिक कराने वाला है। आपको लगेगा कि आपका काम बन रहा है किन्तु बनते-बनते बिगड़ भी सकता है। जो भी आय होगी जिनमें सावधानी आवश्यक है किसी न किसी बात को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिए यह माह व्यवसाय-व्यापार की ओर से मिले जुले फल देने वाला है। मित्रों की सहायता से कार्य में सफलता मिलेगी। कुछ जातकों की नई योजनाओं का क्रियान्वयन होगा वहीं कुछ जातक अपने क्रोध पर काबू न रख पाने के कारण नुकसान उठायेंगे। घर-परिवार में मन मुटाव का वातावरण बनेगा।

वृश्चिक- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते आंशिक लाभ-प्राप्त कराने वाला है। खर्चा विशेष होगा। परिवार में असामन्जस्य व आर्थिक संकट की स्थिति बनेगी। धन लाभ के कई अवसर यूँ ही हाथ से निकल जायेंगे। मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। जीवन साथी का ऐसे समय में सहयोग मिलेगा।

धनु- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह पूर्वार्ध में कुल मिलाकर लाभालाभ की स्थिति रहेगी। व्ययाधिक्य भी रहेगा। शत्रु अवरोध पैदा करेंगे। पर आप उन्हें दूर कर लेंगे। कुछ जातकों का खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त होगा। मान प्रतिष्ठा भी बनी रहेगी। घर-परिवार में मन मुटाव का वातावरण बनेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मकर- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह परिश्रम साध्य लाभ करानेवाला है। कुछ समस्याओं के समाधान मिलेंगे। किन्तु व्यय की अधिकता के कारण मन परेशान रहेगा। कुछ अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। परिवार में समस्या बनेगी पर समाधान निकल आयेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। कुम्भ- इस राशि के जातकों के लिए यह माह व्यवसाय की ओर से सामान्य ही कहा जाएगा। शत्रु सिर उठाएंगे किन्तु प्रभावहीन साबित होंगे। कुछ जातकों के रुके हुए काम बनेंगे। इस माह का पूर्वार्ध, उत्तरार्ध से अच्छा है। परिवार की समस्या का समाधान निकल आयेगा। दाम्पत्य जीवन में भी नॉक झोंक के चलते सामन्जस्य बना रहेगा। मीन- मीन राशि के जातकों के लिए यह माह व्यापार-व्यवसाय की ओर से अवरोधों के चलते निर्वाह योग्य धनलाभ कराने वाला है। कुछ जातकों की नई योजनाएं कार्यान्वित होंगी। कुछ जातकों को रुका हुआ पैसा मिलने की खुशी होगी। किसी नये व्यक्ति के मिलने से व्यवसाय में फायदा हो सकता है। समाज में मान सम्मान बना रहेगा। पारिवारिक सम्पत्ति को लेकर कोई कलह हो सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

-इति शुभम्

शरीर का हिस्सा शरीर को दें, आत्मा का हिस्सा आत्मा को

हिसार, हरियाणा-प्रवास में पूज्य आचार्यवर का उद्बोधन

अपने छह-दिवसीय हिसार, हरियाणा-प्रवास में पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने मानव मंदिर, प्रेमनगर में जन-समुदाय को संबोधित करते हुए कहा- हमारा जीवन शरीर और आत्मा का जोड़ है। इसलिए यह आवश्यक है इन दोनों के बीच संतुलन बना रहे। तभी हम एक सार्थक और शांतिपूर्ण जीवन जी सकेंगे। संतुलन का सीधा-सा अर्थ है शरीर का हिस्सा शरीर को मिले और आत्मा का हिस्सा आत्मा को मिले। शरीर और इंद्रिय-सुखों के लिए अगर हम अपनी आत्मा को दांव पर लगा देते हैं, इससे बड़ी मूर्खतापूर्ण भूल कोई दूसरी नहीं होगी। शरीर को सही खुराक न मिलने पर जैसे शरीर अशक्त और बीमार हो जाता है, वैसे ही आत्मा को सही खुराक न मिलने पर आत्मा भी अशक्त और अस्वस्थ हो जाती है। शरीर की सही खुराक के प्रति आप स्वयं जागरूक हैं, इसलिए उसके लिए मुझे कहने की जरूरत नहीं। किन्तु वह जागरूकता आत्मा की खुराक के लिए नहीं दिख रही है, इसीलिए मानसिक अवसाद, उच्च रक्त-चाप, हृदय-आघात, डायबिटीज, कैंसर जैसी प्राणलेवा बीमारियां दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं। क्योंकि आज आदमी ने शरीर और इंद्रिय सुख-साधनों के लिए अपनी आत्मा को भी दांव पर लगा दिया है।

आपने कहा- मंत्र-जप, योग-प्राणायाम, स्वाध्याय-ध्यान ये सब आत्मा की खुराक हैं। ये अभ्यास आपकी दिन-चर्या के अनिवार्य अंग बनने चाहिए। यदि पूरा परिवार साथ मिलकर ये अभ्यास करें तो इनका प्रभाव सौगुना बढ़ जाएगा। सबेरे ये अभ्यास पूरा परिवार साथ करे तथा सायं पूरे परिवार का भोजन साथ-साथ हो, तो आप अपने पारिवारिक जीवन में एक अलग ही आध्यात्मिक ऊर्जा तथा प्रेमल वातावरण का अनुभव करेंगे। आपका गृहस्थ आश्रम भी सुखद और शांति-आनंद से भरा-पूरा रहेगा।

पूज्य आचार्यवर का छह-दिवसीय हिसार प्रवास बहुत ही प्रभावनापूर्ण रहा। प्रातः छह बजे से नाड़ी-परीक्षण तथा चुम्बक-चिकित्सा का डॉ. अजय पांडे तथा सहयोगी डॉ. अमित जैन की सेवाओं का समाज ने भरपूर लाभ उठाया। पूज्यवर के रात्रि-प्रवचन में बड़ी संख्या में पूरे मनो-योग से जन-समुदाय आत्म-लाभ लेता। सबका आग्रह भरा निवेदन था हर वर्ष कुछ अधिक समय हिसार मानव मंदिर को दिया जाए तो पूरे शहर की प्रेमल भावनाएं पूर्णवत् हरी-भरी हो जाएंगी।

मानव मंदिर केन्द्र की सभी प्रवृत्तियां पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी के मार्ग-दर्शन में सहयोगी साध्वियों तथा कार्यकर्ताओं के श्रम से निरंतर प्रगति पर है।

श्री झूमरमल सिंघी का अकस्मात् देहावसान



स्वर्गीय श्री जयचंदलालजी सिंघी के सुपुत्र श्री झूमरमल सिंघी का 26 अप्रैल 2017 को अकस्मात् हृदय-आघात से देहावसान हो गया। अपने दोनों हाथों से पिता के शरीर को थामे पुत्र गौतम की कोई भी कोशिश उनको मृत्यु-मुख से नहीं बचा सकी। जीवन का यह ऐसा कड़वा सच है जहां आदमी की सारी कोशिशें बेकार हो जाती हैं। वे बहत्तर वर्ष के थे। विशेष यह है वे पूज्य गुरुदेव के संसारपक्षीय छोटे भाई थे।

श्री झूमरमल सिंघी अपने धुन के धनी थे। जीवन में संघर्षों से बराबर जूझते रहे, लेकिन कभी हार नहीं मानी। समय-समय पर बीमारियों ने भी कड़ी परीक्षा ली। हिम्मत और हौसले से सबका सामना किया। मानव मंदिर गुरुकुल के लिए वे

बहुत कुछ करना चाहते थे। अभी संसार से विदा लेने जैसा कोई कारण भी नहीं था। किंतु आयुष्य पूरा हो जाने पर हर प्राणी को परलोक-यात्रा पर निकलना ही पड़ता है।

इस प्रसंग पर पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी तथा पूज्या महासती मंजुलाश्रीजी ने उनकी धर्म-पत्नी श्रीमती चंदा बाई, पुत्र गौतम को विशेष संबल प्रदान करते हुए अपने संदेश में कहा- झूमरमल का यों अकस्मात् चले जाना परिवार पर वज्राघात है। किंतु ऐसे समय ही धर्म और धीरज की परीक्षा होती है। इस परीक्षा में खरे उतरना है। भगवान महावीर की वाणी का स्मरण करते हुए अपने को मोहाकुलता से बचाना है। कर्म-बंधनों से आत्मा को बचाना है। अपने मन को समझाकर खुद को तथा परिवार को सम्हालना है। हमारा मंगल-शांति पाठ आपके साथ सदैव रहेगा। पूरे सिंघी परिवार को भी यही कहना है इस अकल्पित घटना से प्रेरणा लेकर राग-रोष की ग्रंथियों से मुक्त जीवन जीना है।

दिवंगत आत्मा की ऊँची गति और बंधन-मुक्ति के लिए मंगल भावना। मानव मंदिर मिशन तथा रूपरेखा पत्रिका परिवार की ओर से भाव भीनी श्रद्धांजलि।



-ऑस्टिन, अमेरिका में योग-शिविर के शिविरर्थियों के साथ योगी अरुण तिवारी।



-योगी अरुण तिवारी के साथ हैं प्रख्यात गीता-प्रवचनकार विदुषी-जया राव जी व श्रीमती ज्योति कांकरिया जी (ह्यूस्टन, अमेरिका)



-हिसार-पदार्पण पर मानव-मंदिर, हिसार के संयोजक मौन-सेवाभावी श्री देवराजजी वकील पूज्यवर की अभिवंदना करते हुए।



-मावन मंदिर मिशन, नई दिल्ली की संयोजना में एमपैथी फाउंडेशन द्वारा झुग्गीवासियों के निःशुल्क नेत्र-शिविर का एक दृष्य। इसमें चश्मे तथा शल्य-चिकित्सा भी की गई।



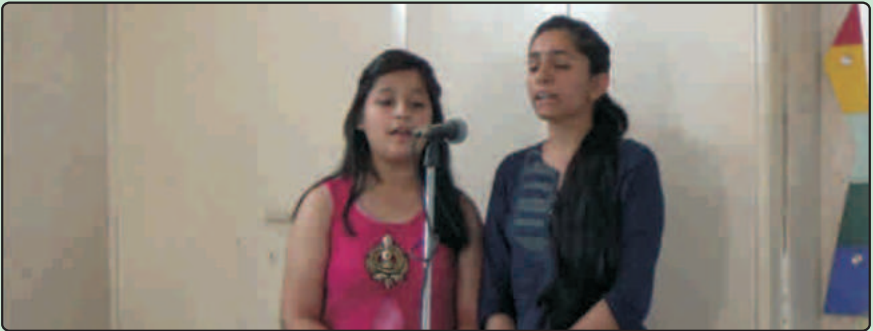
-Mid Brain Activation शिविर में गुरुकुल के छात्र मानव मंदिर केन्द्र, नई दिल्ली ध्यान-मंदिर में विशेष अभ्यास करते हुए।



-हिसार-पदार्पण पर मानव-मंदिर, हिसार में पूज्यवर के प्रवचन का आनन्द लेते हुए जन-समुदाय ।



-पूज्यवर के सम्मान में बोलते हुए (दायें से) अखिल भारतीय मेयर कौंसिल की महासचिव श्रीमती शकुंतला राजलीवाल, समाज-सेवी श्री जयकुमार जैन तथा संयोजन करते हुए योगी अरुण तिवारी ।



-मधुर-गीत प्रस्तुत करते हुए कुमारी हिना तथा कुमारी रश्मिता ।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2015-17

Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

Date of Post : 27-28



SEVA-DHAM Plus

Since 1994

.....The Wellness Center

(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)



KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013

Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-2682 1348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878

Website : www.sevadham.info E-mail : contact@sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
के.एच.-57 जैन आश्रम, रिंग रोड, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे,
पो. बो.-3240, नई दिल्ली-110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस-1
से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया